RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 72 अंक : 16
सृष्टि संवत 1960853116
19 जुलाई 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 16, 16/19 जुलाई 2015 तदनुसार 4 श्रावण सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

इन्द्र स्वाभाविक शक्ति से अकेला सारे कार्य करता है

–ले० श्री स्वामी वेदानंद जी (दयानन्द) तीर्थ

एता विश्वा चकृवाँ इन्द्र भूर्यपरीतो जनुषा वीर्येण
या चित्नु वज्रिन्कृणवो दधृष्वान्न ते वर्ता तविष्या अस्ति तस्याः।।

–ऋ० ५।२९।१४

शब्दार्थ–हे इन्द्र–बल–पराक्रम के भण्डार, सर्वाधार। तूने **अपरीतः**–अकेले **एता+विश्वा**–ये सब कार्य **जनुषा+वीर्येण**–स्वाभाविक शक्ति से। **भूरि**–अनेक प्रकार से। **चकृवान्**–किये हैं और **या+चित्**–जो भी कार्य तू, हे **वज्रिन**–वज्रयुक्त। वारणसामर्थ्यसम्पन्न! **नु**–शीघ्र। **कृणवः**–करता है। **ते**–तेरी। **तस्याः**–उस, **तविष्याः**–शक्ति का। **दधृष्वान्**–दबाने वाला तथा **वर्ता**–पूर्ण रूप से अपनाने वाला। **न+अस्ति**–नहीं है।

व्याख्या–भगवान् ने अद्‌भुत अचिन्त्यपार संसार की रचना की है और प्रतिदिन नये–नये पदार्थों का निर्माण कर रहा है। ये सारे कार्य वह अपरीत–अकेला, दूसरे की सहायता लिए बिना कर रहा है। उसमें इस विश्व के निर्माण का स्वाभाविक सामर्थ्य है। उसका सामर्थ्य ऐसा है कि कोई दबा नहीं सकता, अपना सकने की तो बात ही कौन कहे! भगवान् के बल–सामर्थ्य का वर्णन एक स्तुतिमन्त्र में बहुत ही सुन्दर रीति से हुआ है–

तुविशुष्म तुविक्रतो शचीवो विश्वया मते। आ पप्राथ महित्वना।। –ऋ० ८।६८।२

हे महाबल! हे महाकर्मन्! महाबुद्धे! हे मते! तूने अपनी महत्ता से संसार को पसारा है। भगवान् में बल महान्, कर्म महान्, ज्ञान महान्, सब–कुछ महान् है।

दूसरे स्थान पर कहा गया है–'**विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः**' [ऋ० १०।८६।१]–भगवान् सबसे महान् है, अतः–'**दधृष्वान् न ते वर्त्ता तविष्या अस्ति तस्याः**'–उसकी उस शक्ति को न कोई दबा सकता और न अपना सकता है। सचमुच–

नकिरस्य शचीनां नियन्ता सूनृतानाम्। नकिर्वक्ता न दादिति।। –ऋ० ८।३२।१५

इस भगवान् की सच्ची मीठी शक्तियों का न कोई नियन्ता है, न कोई वक्ता है, न कोई दाता है।

उसकी शक्तियां सच्ची हैं, अर्थात् त्रिकालाबाधित हैं, किसी समय उसकी शक्ति में विघ्न या रुकावट नहीं आ सकती। अबाधित होने के कारण उनका नियन्ता कोई नहीं हो सकता। अनन्त होने के कारण उनका कोई वक्ता भी नहीं है। जब अनन्त शक्तियां हैं, तो उनका वर्णन कौन करे ? जीव सारे अल्पज्ञ, सान्त, उस अनन्तशक्ति की शक्तियों का कथन कैसे करें ? जो कही ही न जा सकती हो, उसके देने की बात तो दूर रही! भगवान् के बल को कोई भी नहीं दबा सकता–

न मे दासो नार्यो महित्वा व्रतं मीमाय यदहं धरिष्ये।

जिस व्रत को मैं धारण करता हूं, महत्त्व के कारण न दास और न आर्य उस व्रत को मार सकते हैं। भला, बुरा कोई भी भगवान् के कार्यों को नहीं कर सकता, उनको वह स्वयं ही करता है। वेद में कहा ही है–

न तत्ते अन्यो अनुवीर्यं शकन्न पुराणो मघवन्नोत नूतनः।।

–अ० २०।१७।५

मघवन! नया–पुराना कोई भी तेरी शक्ति का अनुकरण नहीं कर सकता। भगवान् सदा से अनुपम शक्तिमान् है।

जब वेद यह कहता है कि भगवान् के सामर्थ्य को कोई अपना नहीं सकता, तो इसका गहरा अभिप्राय है। इसका अभिप्राय यह नहीं कि भगवान् के धारणीय दया आदि गुणों को भी हम धारण न करें, प्रत्युत इसका भाव यह है कि भगवान् का सामर्थ्य अनन्त है। सान्त जीव अनन्त के सामर्थ्य को कैसे धारण कर सकता है ? सृष्टि–रचना आदि भगवान् के विशिष्ट कर्मों के करने की शक्ति तो जीव में आ ही नहीं सकती। व्यासमुनि ने, 'वेदान्त दर्शन' में इसी आशय को लक्ष्य में रखकर कहा–

भोगमात्रसाम्यलिङ्गाच्च। –४।४।२१

मुक्त जीव तथा भगवान् में आनन्द–भोग की समता है।

प्रश्न यह है कि मुक्त जीव जब सब साधनों से मुक्त हो गया, तो वह भगवान् या भगवान् के समान क्यों न माना जाए ? महर्षि व्यास उत्तर देते हैं कि यह सत्य है कि मुक्ति प्राप्त करने पर जीव बन्धनरहित हो गया, किन्तु बन्धनशून्यता का आरम्भ होने के कारण उसके अन्त की सम्भावना भी है। अल्पज्ञ, अल्पसामर्थ्य जीव परमात्मनिष्ठ हो जाने के कारण परमात्मा के आनन्दगुण के उपभोग का अधिकारी तो हो जाता है, किन्तु उसकी अनन्तता तथा सृष्टि–रचनादि गुण उसको कभी प्राप्त नहीं होते।

–स्वाध्याय संदोह से साभार

ब्रह्माण्ड और वेद-यथार्थता की कसौटी पर

-ले० पण्डित वेदप्रकाश शास्त्री, 4-E, कैलाश नगर, फाजिलका, मोबाइल-94634-28299

(गतांक से आगे)

इससे पूर्णरूपेण स्पष्ट है कि सूर्यदेव किसी भी मन्दाकिनी-केन्द्र की परिक्रमा...वर्ष में पूरी नहीं करते। अत: लेखक का प्रमाणहीन कथन भ्रामक होने के साथ ही हेय भी है। क्योंकि लेखक ने वैदिक मान्यताओं में अवैदिक विचारों की मिलावट का दु:साहस किया है। लेखक-"उसकी (परमात्मा की) प्रसन्नता के लिए हम क्या कर सकते हैं।"

समीक्षा-ईश्वर किसी के कार्य से न तो प्रसन्न होता है और न ही अप्रसन्न। प्रसन्न और अप्रसन्न होना तो मनुष्यादि जीवों का कार्य है। ईश्वर किसी वस्तु की इच्छा नहीं करता, न ही ईर्ष्या-द्वेष करता है। यह तो जीवात्मा के लक्षण हैं-

इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख दु:खज्ञानान्यात्मनो लिङ्गमिति।।

-न्याय० १।१।१०

ईश्वर के लक्षण इस प्रकार है-

क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्ट: पुरुषविशेष ईश्वर:।।

योग० समाधिपाद सू० २५

जो अविद्यादिक्लेश, कुशल, अकुशल, इष्ट, अनिष्ट और मिश्र फलदायक कर्मों की वासना से रहित है, वह सब जीवों से विशेष 'ईश्वर' कहाता है।

इससे पूर्णत: स्पष्ट हो जाता है कि ईश्वर के प्रसन्न अप्रसन्न होने का प्रश्न ही नहीं है। वह तो व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार फल देता है। स्वयं मानवीय कर्म और कर्मफल से रहित है।

हम बाग में जाते हैं। गुलाब के खिले हुए रंग-बिरंगे सुगन्धित फूलों को देखकर अनायास ही हमारे मुंह से निकल जाता है-अहा! कितने सुन्दर फूल हैं, कैसी भीनी-भीनी खुशबू आ रही है, कितने आकर्षक हैं, कितने मनमोहक हैं, कितने प्यारे हैं ?

परन्तु हमारी इस प्रशंसा का गुलाब के फूलों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। बस, इसी प्रकार हमारी प्रशंसा का उस परमात्मा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

लेखक-"ब्रह्म नामक पहले ऋषि हुए जो ऋग्, यजु, साम और अथर्व अकेले मुखस्थ करके सबको वेद विधान बताते रहे। इसीलिए इन्हें वृद्ध पितामह ब्रह्मा की उपाधि देकर चतुरानन भी कहा जाने लगा।"

समीक्षा-वेद के प्रकाश के सम्बन्ध में ऋषि कहते हैं-प्रथम अर्थात् सृष्टि के आदि में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा ऋषियों के आत्माओं में एक-एक वेद का प्रकाश किया।

प्रश्न-यो वै ब्रह्मणम्...।। इस वचन से ब्रह्मा जी के हृदय में वेदों का उपदेश किया है। फिर अग्न्यादि ऋषियों की आत्माओं में क्यों किया?

उत्तर-ब्रह्मा के आत्मा में अग्नि आदि के द्वारा स्थापित कराया।

स. प्र. समु. 7 पृ. 167

जिस परमात्मा ने आदि सृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न करके अग्नि आदि चारों ऋषियों के द्वारा चारों वेद ब्रह्म को प्राप्त कराए और उस ब्रह्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा से ऋग्, यजु, साम और अथर्ववेद का ग्रहण किया।

स. प्र. समु. 7 पृ. 168

ऋ. भा. भू. के वेदोत्पत्ति विषय में पृ. 22 पर भी इसी प्रकार उल्लिखित है।

प्रश्न-चार मुख के ब्रह्मा जी ने वेदों को रचा, ऐसे इतिहास को हम लोग सुनते हैं।

उत्तर-"ऐसा मत कहो। ... क्योंकि ब्रह्मादि ने भी वेदों को पढ़ा है। 'श्वेताश्वतर' उपनिषद् के अनुसार-'जिसने ब्रह्मा को उत्पन्न किया और ब्रह्मादि को सृष्टि के आदि में अग्नि आदि के द्वारा वेदों का उपदेश भी किया है।"

समीक्षा-'ब्रह्मा' चतुर्वेदज्ञ तो थे परन्तु 'चतुरानन' नहीं। किसी व्यक्ति के चार मुख होना असम्भव है। यह पौराणिक कल्पना है। वैदिक विचार और सिद्धान्त नहीं। लेखक ने वैदिक और अवैदिक विचारों की खिचड़ी पकाने का अनथक प्रयत्न किया है जिसमें कोई औचित्य नहीं। लेखक को दोनों की मान्यताओं के अन्तर को अवश्य समझना चाहिए अथवा दोनों के अन्तर को समझते हुए भी दोनों के सिद्धान्तों को मिलाकर प्रस्तुत करने का दु:साहस नहीं करना चाहिए।

लेखक-"आज से पांच हजार साल पहले पराशर ऋषि के पुत्र कृष्ण द्वैपायन बादरायण जी हुए, जो वेदों को नए ढंग से सम्पादन करके 'वेदव्यास' तो कहलाए गए।"

समीक्षा-महर्षि दयानन्द का इस सम्बन्ध में पूर्णत: स्पष्ट दृष्टिकोण है-

"जो व्यास कृत ग्रन्थ हैं, उनका सुनना-सुनाना व्यास जी के जन्म के पश्चात् हो सकता है, पूर्व नहीं। जब व्यास जी का जन्म भी नहीं था तब वेदार्थ को पढ़ते-पढ़ाते, सुनते-सुनाते थे। इसीलिए सबसे प्राचीन ब्राह्मण ग्रन्थों में ही यह सब घटना हो सकती है, इन श्रीमद् भागवत शिवपुराणादि मिथ्यावाद दूषित ग्रन्थों में नहीं घट सकती।

जब व्यास जी ने वेद पढ़े और पढ़ा कर वेदार्थ फैलाया, इसीलिए उनका नाम 'वेदव्यास' हुआ। क्योंकि व्यास कहते हैं आर-पार की मध्य रेखा को, अर्थात् ऋग्वेद के आरम्भ से लेकर अथर्ववेद के पार पर्यन्त चारों वेद पढ़े थे और शुकदेव तथा जैमिनी आदि शिष्यों को पढ़ाए भी हैं। नहीं तो उनका जन्म का नाम "कृष्ण द्वैपायन" था। जो कोई यह कहते हैं कि "वेदों को व्यास जी ने इकट्ठे किया" यह बात झूठी है। क्योंकि व्यास जी के पिता, पितामह, प्रपितामह, पराशर, शक्ति और वशिष्ठ और ब्रह्मा आदि ने भी चारों वेद पढ़े थे, यह बात क्यों कर घट सके।"

स. प्र. समु. 11 पृ. 273

ऋ. भा. भू. वेदोत्पत्ति विषय पृ. 22-23 पर महर्षि दयानन्द लिखते हैं-

"इसी प्रकार व्यास जी ने चारों वेदों की संहिताओं का संग्रह किया है इत्यादि इतिहासों को भी मिथ्या ही जानना चाहिए।

जब मरीच्यादि ऋषि और व्यास आदि मुनियों का जन्म भी नहीं हुआ था, उस समय भी ब्रह्मादि के समीप वेद वर्तमान थे।"

समीक्षा-उपर्युक्त प्रमाणों से पूर्णत: स्पष्ट है कि महर्षि व्यास ने वेदमन्त्रों या वेदों का संग्रह नहीं किया। यदि इन्होंने किया होता तो इससे पूर्व रामायण काल में श्रीराम, हनुमान् आदि वेद कैसे पढ़ते ? सत्ययुग में भी तो वेदों का प्रचलन था। अत: लेखक का कथन मिथ्या होते हुए पौराणिकता पर आधारित है। पौराणिक विचारों को 'आर्य जगत्' के माध्यम से फैलाने का यह कुत्सित प्रयास है।

सम्पादक महोदय को भी चाहिए कि कोई भी लेख प्रकाशित करने से पूर्व उसकी प्रमाणिकता पर अवश्य ध्यान दें क्योंकि ऐसे भ्रान्तिजनक लेखों से आर्यों में भी अवैदिक धारणाएं घर कर जाएं तो कोई आश्चर्य न होगा।

सम्पादकीय.....

यूपीएससी परीक्षा में प्रथम चार स्थानों पर लड़कियों का होना गौरव की बात

अभी हाल ही में आए संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा के नतीजों में जिस प्रकार से लड़कियों ने बाजी मारी है उसने उन लोगों के मुंह बन्द कर दिए हैं जो आज भी बेटियों के प्रति संकीर्ण सोच रखते हैं और उन्हें गर्भ में ही समाप्त करना चाहते हैं। समाज की इस पुरूष प्रधान सोच का इन लड़कियों ने करारा जवाब दिया है। 21 वीं सदी में आज हम जी रहे हैं परन्तु फिर भी समाज के कुछ वर्गों में लड़कियों के प्रति संकीर्ण सोच बनी हुई है। यूपीएससी परीक्षा में जिस प्रकार प्रथम चार स्थानों पर लड़कियों ने अपना परचम लहराया है इससे उन लोगों को सबक लेना चाहिए जो घर में बेटी होने पर खुश नहीं होते और उसे बोझ समझते हैं। लड़का पैदा होने पर सभी खुशियां मनाते हैं, उसके जीवन में पहली बार आने वाले सभी त्यौहारों को धूमधाम से मनाते हैं परन्तु जब लड़की पैदा हो जाती है तो उनके चेहरे पर मायूसी सी छा जाती है। जब तक इस प्रकार की संकीर्ण सोच से समाज उपर नहीं उठता है तब तक नारी के प्रति पुरूष की विकृत सोच को बदला नहीं जा सकता। इस परीक्षा में जिस लड़की ने टॉप किया है वह शारीरिक रूप से 60 प्रतिशत विकलांग है। जरा सोचिए किस प्रकार उन मां-बाप ने उस लड़की का पालन पोषण किया है, किस प्रकार जीवन में आगे बढ़ने के लिए उसके हौंसले को बुलन्द किया, इस बात से सारे समाज को प्रेरणा लेनी चाहिए और अपनी मानसिकता को बदलना चाहिए। ऐसे माता पिता का सम्मान करना चाहिए जिन्होंने अपनी बेटी के भविष्य में विकलांगता को बाधा नहीं बनने दिया। लड़कियां कभी बोझ नहीं होती, इस बात को देश भर में प्रथम स्थान प्राप्त कर इरा सिंगल ने साबित कर दिखाया। दिल्ली की रहने वाली इरा इससे पहले भी तीन बार इस परीक्षा को पास कर चुकी है। पहली बार 2010 में सफल रही। शारीरिक रूप से अक्षम होने के कारण ज्वाइनिंग नहीं मिली। चार साल तक केस लड़ा, फैसला जनवरी 2014 में आया, तब जाकर दिसम्बर 2014 में ज्वाइन किया। इरा का मानना है कि उनकी इस सफलता से लड़कियों के प्रति लोगों का नजरिया बदलेगा। क्या विकलांग पैदा होना कोई गुनाह है? क्या विकलांग पैदा होना उसके अपने वश में है? क्या केवल विकलांग होने के कारण हम उसकी योग्यता या मेहनत पर पानी फेर दें? क्या विकलांग होने के कारण ही वह अक्षम मान लिया जाएगा और उसे आगे बढ़ने का अवसर नहीं दिया जाएगा? इन सभी बातों पर आज विचार करने की आवश्यकता है। इरा ने जो करके दिखाया, उससे लड़कियों के प्रति नजरिए में बदलाव तो आएगा ही परन्तु इससे समाज के अन्दर यह भी संदेश जाएगा कि विकलांगता या शारीरिक रूप से अक्षम होना किसी के मार्ग में बाधा नहीं बन सकता। इस प्रकार के बच्चों को सही प्रोत्साहन मिले, इरा की तरह सभी को आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा देने वाले मां बाप मिले तो वे भी जीवन में आगे बढ़ सकते हैं। इरा ने विकलांग होने के बावजूद जो करके दिखाया, वह शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ होने पर भी कोई नहीं कर सकता।

आज आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की दूरदर्शी सोच का परिणाम दिखाई देता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का मानना था कि कोई भी समाज तब तक उन्नति नहीं कर सकता जब तक उसमें स्त्रियों को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखा जाता है। इसके लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने नारी शिक्षा के लिए आवाज उठाई। उन्होंने ऐसे समय में उन्हें अधिकार और शिक्षा देने की बात कही, जिस समय में लड़कियों को गर्भ में ही मार दिया जाता था, लड़की का पैदा होना अपशकुन माना जाता था, स्त्रियों को घरों की चारदीवारी में बन्द रखा जाता था। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द ने नारी शिक्षा का सूत्रपात किया। महर्षि दयानन्द की इस सोच का यह परिणाम हुआ कि उनके समय में और उसके बाद जो कन्या स्कूल खोले गए आज वो महाविद्यालय का रूप धारण कर चुके हैं। जालन्धर का कन्या महाविद्यालय इसी का एक उदाहरण है। मानव संसाधन मन्त्रालय के द्वारा देश के जिन 19 कॉलेजों को हैरिटेज का दर्जा दिया गया है उसमें पंजाब का एकमात्र कॉलेज जालन्धर का कन्या महाविद्यालय है। यह हम सब के लिए गौरव की बात है। आजादी से पहले महर्षि दयानन्द के अनुयायियों द्वारा स्थापित अपनी प्राचीन धरोहर को संभाले हुए यह महाविद्यालय आज अपनी एक अलग पहचान बना चुका है।

आज महर्षि दयानन्द के कारण ही नारी जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति कर रही है। अगर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नारी शिक्षा के लिए आवाज न उठाई होती तो समाज के नारी की क्या स्थिति होती इसका अनुमान लगाया जा सकता है। महर्षि दयानन्द अकेले ऐसे महापुरूष थे जिन्होंने हर प्रकार की बुराईयों, कुरीतियों और अन्धविश्वासों के विरूद्ध अपनी आवाज को बुलन्द किया। चाहे वह बाल विवाह हो, सती प्रथा हो, मूर्ति पूजा हो, गुरूडमवाद हो या अन्य कोई भी कुरीति हो। महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में वैदिक सिद्धान्तों से कभी समझौता नहीं किया, कभी किसी के आगे हार नहीं मानी, चाहे उसके लिए उन्हें कितने की कष्ट क्यों न सहने पड़े हों। आज समाज में बाल विवाह के लिए सती प्रथा के लिए, नारी जाति के अधिकारों के लिए जो कानून बने हैं, वह सब महर्षि दयानन्द के द्वारा किए गए कार्यों का परिणाम है।

मेरा इस लेख को लिखने का अभिप्राय केवल इतना ही है कि आज समाज में लोगों का लड़कियों के प्रति, शारीरिक रूप से विकलांगों के प्रति जो सोच है, नजरिया है उसे बदलना है। क्यों आज लोग जन्म से पहले भ्रूण की जांच करवाना चाहते हैं और जब पता चलता है कि गर्भ में लड़की है तो उसकी भ्रूण हत्या करना चाहते हैं? क्यों लोग लड़कियों को अपने ऊपर बोझ समझते हैं? क्यों एक ही घर में लड़के और लड़की को समान रूप से अधिकार नहीं मिलते? क्यों हम विकलांग होने मात्र से किसी को अयोग्य समझ लेते हैं? क्यों किसी को अपंग देखकर उसका उत्साह बढ़ाने के बजाय उसका उपहास किया जाता है? इन सब पर हमें विचार करना है। ऐसी संकीर्ण सोच को बदलकर एक नए समाज का निर्माण करना है जहां पर लड़के और लड़की में किसी प्रकार का कोई भेद न हो। इस संकीर्ण सोच के कारण की हमारा समाज पीछे जा रहा है। इस परीक्षा से समाज में लड़कियों और अपंगों के प्रति एक सकारात्मक संदेश जाएगा। कोई उनकी विकलांगता का उपहास नहीं करेगा बल्कि उनकी उपलब्धियों पर गर्व करेगा। सब प्रकार के भेदभावों को मिटाकर ही हम एक स्वस्थ और सुन्दर राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं।

प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

हम अपने हृदय में प्रभु दर्शन करें

स्व० श्री मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला रोड देहरादून

मनुष्य जीवन का उद्देश्य प्रभु का दर्शन कर सभी दु:खों से 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों तक मुक्त रहना व ईश्वर के सान्निध्य में रह कर आनन्द को भोगना है। हमारे यहां एक नहीं अपितु अनेक ऋषियों ने अतीत में ईश्वर का साक्षात्कार कर मुक्ति की अवस्था को प्राप्त किया है। मनुष्य के जीवन का उद्देश्य ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष है। यदि हम अर्थ व काम का सेवन वेद विहित मर्यादाओं व धर्मानुसार नहीं करेंगे तो हम मुक्ति से वंचित होकर बन्धनों व दु:खों में फंस जाते हैं। यजुर्वेद के 32वें अध्याय के आठवें मन्त्र में ईश्वर का मनुष्य की हृदय गुहा में विद्यमान होने, यह सारा संसार ईश्वर में एक घोंसले के समान होने तथा सारा विश्व व ब्रह्माण्ड ईश्वर से उत्पन्न होकर प्रलयावस्था में उसी में समाविष्ट हो जाने की बहुत महत्त्वपूर्ण शिक्षा दी गई है। इस मन्त्र में व इसमें निहित रहस्यों का आज हम परिचय प्राप्त करा रहे हैं। आशा है कि पाठक इससे लाभान्वित होंगे। मन्त्र है-

वेनस्तत् पश्यन्निहितं गुहा सद्, यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।

तस्मिन्नदं सं च विचैति सर्वं, स ओत, प्रोतश्च विभू: प्रजासु।।

इस मन्त्र का ऋषि स्वयम्भू ब्रह्मा, देवता परमात्मा एवं छन्द निचृत् त्रिष्टुप है। मन्त्र के पदों का अर्थ इस प्रकार है। (वेन:) मेधावी, इच्छुक, गतिमय, अर्चनाशील, श्रवण-चिन्तनशील, मनुष्य (तत्) उस ब्रह्म को (पश्यत्) देख लेता है, (जो ब्रह्म) (गुहा निहितं सत्) गुहा में निहित है, गुप्त है (यत्र) जिसमें (विश्व) विश्व (एकनीडं) एक घोंसले वाला, एक आश्रयवाला (भवति) होता है। (तस्मिन्) उस (ब्रह्म) में (इदं सर्वं) यह सब (जगत) (सम् एति च) समाविष्ट हो जाता है, (वि एति च्) (उत्पत्तिकाल में) बाहर निकल जाता है। (स:) वह (विभू:) व्यापक ब्रह्म (प्रजासु) प्रजाओं में (ओत: प्रोत: च) ओत और प्रोत है। इस वेदमन्त्र के पदों के अर्थ और व्याख्या हम वेदों के प्रसिद्ध विद्वान डा. रामनाथ वेदालंकार जी की पुस्तक 'वेद मंजरी' से दे रहे हैं। मन्त्र का भावार्थ व व्याख्या करते हुए वह लिखते हैं कि परमात्मा गुहा में निहित हैं, गुह्य हैं। जो मेधावान् हैं, जिसके अन्दर ऋतम्भरा प्रज्ञा का उदय हो गया है, जिसे प्रभु दर्शन की उत्कट लालसा लगी हुई है, जो कर्मण्य है, जो अर्चनाशील है। मन से उसे पाने के लिए प्रवृत्त होता है, जो श्रवणशील और चिन्तनशील है, वही उसके दर्शन कर पाता है। वह प्रभु सबका आवास-स्थान और आश्रय-स्थान है। हर मनुष्य, मनुष्य ही क्यों, जगत् का प्रत्येक जड़-चेतन उस पर मानो अपना-अपना घोंसला बनाकर बैठा हुआ है। वृक्ष पर घोंसले में बैठा पक्षी भले ही समझता रहे कि मेरा आश्रय तो घोंसला है, पर असल में उसका आश्रय वृक्ष होता है।

इसी प्रकार हम लोग अपनी नासमझी के कारण चाहे इस भ्रम में पड़े रहें कि हमारा आश्रय मकान-महल, सखा कुटुम्बी, राजे-महाराजे आदि हैं, पर वस्तुत: तो वह प्रभु ही हमारा अन्तिम आश्रय स्थान है। उसका हाथ, उसकी छत्रछाया, उसकी सहायता, उसका आश्वासन हट जाने पर हम एक पग भी नहीं चल सकते, एक सांस भी नहीं ले सकते। उसका आधार खिसकते ही हमारे आश्रय बने हुए ये भव्य भवन, ये ऊंची-ऊंची अट्टालिकाएं, ये मीनार, मन्दिर, गुम्बद, ये विद्युत्प्रदीपों से जगमगाते हुए शानदार नगर सब क्षण-भर में धराशायी हो जाएं। उसका हाथ हट जाने पर धरती-आसमान भी रो उठें। यह समस्त जगत्प्रपंच सृष्टिउत्पति के समय उसी ब्रह्म में से निकल आता है और प्रलयकरण में उसी के अन्दर समा जाता है। जैसे मकड़ी की आत्मा मकड़ी के शरीर से जाले को बाहर निकालती है और फिर जाले को शरीर में ही समेट लेती है, वैसे ही ब्रह्म अपने शरीर भूत-प्रकृति से जगत्-प्रपंच को सृजता है और फिर अपने प्रकृतिरूप शरीर में ही समेट लेता है। जैसे पृथिवी बीज में से औषधियों को उत्पन्न करती हैं ? वैसे ही ब्रह्म प्रकृति रूप बीज से सृष्टि उत्पन्न करता है। जैसे मनुष्य का चेतन आत्मा शरीर में से केश और रोगों को प्रकट करता है, वैसे ही ब्रह्म अपने प्रकृति रूप शरीर में से विश्व को प्रकट करता है। ब्रह्म अपनी रची हुई सब प्रजाओं के अन्दर ओत-प्रोत भी है (अर्थात् सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी)। घट को रचने वाला कुम्भकार घट के अन्दर ओत-प्रोत नहीं होता पर प्रभु की लीला विचित्र है, वह अपनी रची हुई प्रजाओं को धारण करने के लिए उनके अन्दर ओत-प्रोत भी है (अर्थात् उन सब में समाया हुआ है)। जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रपंच का ऐसा महान उत्तरदायित्व जिसने अपने ऊपर लिया हुआ है, आओ, उस प्रभु के चरणों में नमस्कार करें और 'वेन' बनकर उसके दर्शनों से कृतकृत्य हों।

इस वेदमन्त्र में बताया गया है कि ईश्वर मनुष्य की हृदय गुहा में हर क्षण व हर पल विद्यमान है अर्थात् समाया हुआ है। ओत प्रोत व सर्वत्र विद्यमानता व उपस्थिति उसी सत्ता की हो सकती है। जो सर्वव्यापक और सर्वान्तरयामी हो। वस्तुत: ईश्वर निराकार, सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी होने के कारण ही हमारे भीतर व बाहर ओत-प्रोत है। हमें शुद्ध भोजन व सात्विक चिन्तन से वैदिक साहित्य का अध्ययन कर अपनी बुद्धि को निर्मल व पवित्र बनाना है। ऐसा होने पर ईश्वर का अपनी हृदय गुहा में चिन्तन व ध्यान करने पर वह परमात्मा उपासक के लिए अपने यथार्थ स्वरूप का प्रकाश कर देता है। इस स्थिति का वर्णन वैदिक साहित्य का अध्ययन कर करते हुए मुण्डक उपनिषद में कहा गया है कि भिद्यते हृदयग्रंथिश्छिद्यन्ते सर्वसंशया:। क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे पराऽवरे।। जब (स्वाध्याय व वैदिक साधना से) इस जीव के हृदय की अविद्या-अज्ञानरूपी गांठ कट जाती है तब संशय छिन्न-भिन्न हो जाते हैं और दुष्ट व पाप कर्म क्षय को प्राप्त होते हैं। तब वह परमात्मा को जो अपनी आत्मा के भीतर और बाहर व्यापक हो रहा है, उसका साक्षात्कार कर लेने पर निर्भ्रान्त होकर उसमें निवास करता है। ईश्वर में आनन्द की पराकाष्ठा है, अत: जीवात्मा को ईश्वर का साक्षात्कार हो जाने पर जीवात्मा भी ईश्वर के आनन्द की पराकाष्ठा का अपनी सामर्थ्यानुसार अनुभव करता है। अपनी-अपनी आत्मा की यही स्थिति संसार के सभी जीवों व मनुष्यों के लिए प्राप्त करने योग्य है। यह संसार का शायद सबसे बड़ा आश्चर्य है कि मनुष्य अपने यथार्थ लक्ष्य ईश्वर का ज्ञान व साक्षात्कार को भूल कर सारा जीवन धन-दौलत के संग्रह में ही व्यतीत कर देता है। वह संसार से शुभकर्म फलों की पूंजी के नाम पर खाली हाथ ही संसार से नहीं जाता अपितु पाप की गठरी लेकर जाता है। जिसका परिणाम भावी जन्मों में निरन्तर दु:खों का मिलना होता है। अत: इस वेदमन्त्र का लाभ उठा कर इससे अभिज्ञ मनुष्यों को वेदों व वैदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय कर ईश्वर के स्वरूप को जानकर हृदय गुहा में ईश्वर का ध्यान व चिन्तन करना चाहिए जिससे ईश्वर की कृपा होने पर उसे सर्वव्यापक व सबमें ओत-प्रोत प्रभु का यथासमय दर्शन हो सके।

यह भी ध्यान रहे कि प्रभु दर्शन के लिए हमें मेधावी, ईश्वर दर्शन का इच्छुक, गतिमय, अर्चनाशील, श्रवण-चिन्तनशील बनना होगा। मन्त्र में यह भी बताया गया है कि उस ईश्वर में यह सारा विश्व एक घोंसले के समान है। जिस प्रकार से बड़े वृक्ष में अनेक घोंसले हो सकते हैं व होते हैं उसी प्रकार से सर्वव्यापक परमेश्वर में हमारी पृथ्वी रूपी घोंसले के समान अनेक व असंख्य घोंसले अर्थात् पृथिवियां हैं जहां हमारी तरह से मनुष्य व अन्य प्राणी रहते हैं। यह रहस्य भी इस मन्त्र से विदित होता है। मन्त्र में यह भी बताया गया है कि यह सृष्टि ईश्वर से ही उत्पन्न होती है और प्रलय के समय उसी में समाविष्ट हो जाती है। ईश्वर ही इस सृष्टि का रचयिता व पालनकर्त्ता है। इस अन्य लेख का अधिक विस्तार न कर हम निवेदन करते हैं कि आईए, मन्त्र के प्रत्येक पद व शब्द पर विचार व चिन्तन करें और इस सृष्टि यज्ञ के रचयिता परमेश्वर का अपनी हृदय गुहा में ध्यान कर उसका दर्शन करने का प्रयत्न करें और अपने जीवन को सफल बनाएं। वेदानुसार इस स्थिति को प्राप्त हों कि हम कह सकें कि वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं आदित्य वर्णम् तमस: परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्य: पन्था विद्यतेऽयनाय।। मैंने उस महान परमेश्वर को जान लिया व देख लिया है। वह सूर्य के समान प्रकाशित व अन्धकार से सर्वथा पृथक है। उसी परमेश्वर को जानकर मैं मृत्यु रूपी दु:ख से निवृत हो गया हूं व मृत्यु के दु:ख से पार हो गया हूं। मृत्यु रूपी दु:ख से बचने का संसार में अन्य कोई उपाय नहीं है। अर्थात् ईश्वर को जानकर व दर्शन कर ही मनुष्य मृत्यु रूपी दुख पर विजय प्राप्त कर सकता है।

देश के चार महान राजनीतिज्ञ

-ले० खुशहाल चन्द्र आर्य गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गांधी रोड कोलकत्ता

जब हम अपने प्यारे देश भारत के अतीत का उज्जवल इतिहास का अवलोकन करते हैं तो हमें चार महान् राजनीतिज्ञों का दिग्दर्शन होता है जो भारत के नभ-मण्डल में अपनी तेजस्विता के कारण देदीप्यमान है। उनके नाम हैं-1. भगवान श्रीकृष्ण 2. आचार्य चाणक्य 3. महाराजा शेर शिवा जी 4. लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल। इन चारों का यहां पर संक्षिप्त परिचय देने जा रहे हैं, जो इसी भांति है।

1. भगवान श्रीकृष्ण-ये एक महान योद्धा, बलवान, कुशाग्र, बुद्धिमान, साहसी व परम् धैर्यवान तो थे ही साथ ही एक महान राजनीतिज्ञ भी थे। महाभारत में कौरवों की तरफ से महान् योद्धा दादा भीष्म, (महारथी) गुरू द्रौणाचार्य, गुरु कृपाचार्य व कर्ण जैसे महारथी होने के बाद तथा साथ ही एक विशाल ग्यारह अक्षौणी सेना के होने पर भी भगवान श्रीकृष्ण की कुशल राजनीति ही थी जिसके कारण पाण्डवों का कमजोर पक्ष होते हुए भी उनको विजय दिलवाई। इस विजय का पूरा श्रेय भगवान श्री कृष्ण को जाता है। महाभारत में एक नहीं अनेक ऐसे स्थल आते हैं, यदि उस समय श्री कृष्ण अपनी बुद्धिमत्ता न दिखाते तो पाण्डवों का विजयी होना असम्भव ही था। कर्ण, अर्जुन से हर बात में अधिक बलशाली था। उसका रथ कीचड़ में फंस जाने पर कर्ण को मारने का संकेत देना, अर्जुन द्वारा जयद्रथ को सूर्य छिपने से पहले मारने की प्रतिज्ञा को सफल बनाना, दादा भीष्म व गुरु द्रौणाचार्य को मारने की युक्ति बताना, दुर्योधन की जांघ पर भीम द्वारा प्रहार करवाना आदि सामायिक कार्य करवाना श्री कृष्ण की ही बुद्धिमत्ता थी जिसके कारण पाण्डवों को विजय प्राप्त हुई। श्रीकृष्ण एक अद्वितीय महापुरुष थे, उनमें आपत्तियों से निकलने की अद्भुत क्षमता थी जिसके कारण वे हारी बाजी को जीत लेते थे। वे वेदों के भी प्रकाण्ड विद्वान् थे, तभी तो वे गीता ज्ञान देकर अर्जुन का मोह भंग करवा कर युद्ध के लिए तैयार कर सकें। भगवान् श्रीकृष्ण का धर्म, अन्य धर्माधिकारियों की तरह "अहिंसा परमो धर्म:" वाला धर्म नहीं था। उनका धर्म, पापियों, दुष्टों को छल, बल आदि किसी भी प्रकार मार देना ही धर्म था। उनका कहना था कि जो पापी का साथ देता है, वह भी पापी है। उनको मारना भी धर्म है इसलिए दुर्योधन पापी का साथ देने वाले दादा भीष्म, गुरु द्रौणाचार्य, गुरु कृपाचार्य व कर्ण जैसे लोगों को पापी समझकर ही मरवाया। श्री कृष्ण की राजनीति केवल सराहनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी है।

2. आचार्य चाणक्य-भारत के इतिहास में राजनीति में दूसरा स्थान आता है आचार्य चाणक्य का। ये भी एक विलक्षण बुद्धि के राजनीतिज्ञ थे। जब अवध के अन्यायी राजा महानन्द ने अपने मन्त्री चाणक्य का अपमान करके उसको अपने महल से निकाल दिया। तब महा पण्डित चाणक्य ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं महानन्द के इतने बड़े साम्राज्य को नष्ट करके ही दम लूंगा और उसने वैसा ही कर दिखाया। चाणक्य एक बड़े दूरदर्शी व्यक्ति थे। जब उसने राजमहल के बाहर ही महाराजा की दईया मूरी का एक होनहार लड़का जिसका नाम चन्द्र गुप्त था, अपने साथियों के साथ खेल रहा था और वह राजा का पार्ट लेकर खेल रहा था। चाणक्य की दूरदर्शित बुद्धि ने जान लिया कि यह बालक विलक्षण बुद्धि का है, यदि इसको शस्त्र विद्या सिखा दी जाए तो इसके द्वारा मैं महानन्द को परास्त कर सकता हूं और ऐसा ही करके चन्द्रगुप्त द्वारा महानन्द को परास्त किया और उसके साम्राज्य का विनाश करके चन्द्रगुप्त को सम्राट बना दिया और स्वयं अवध राज्य का महामन्त्री बनकर जंगल में एक कुटिया में एक तपस्वी जीवन बना कर रहने लगा। उसी कुटिया में रहकर पूरे साम्राज्य की देखभाल करने लगा। राज्य की व्यवस्था इतनी बढ़िया व सुदृढ़ थी कि कोई भी राजा चन्द्रगुप्त के राज्य की तरफ आँख उठाकर देखने का भी दुसाहस नहीं कर सकता था। चाणक्य ने एक चाणक्य नीति पुस्तक भी लिखी जिसको पढ़कर लोग आश्चर्यचकित हो जाते हैं। चाणक्य जैसा बुद्धिमान, राजनीतिज्ञ, चरित्रवान् व राष्ट्र हित के प्रति समर्पित भाव वाले व्यक्ति भारत के इतिहास में ढूंढने से भी बहुत कम मिलते हैं। उसके महामन्त्री काल में जनता पूर्ण सुखी व आनन्दित थी। कहा जाता है कि जिस राज्य का मन्त्री जंगल में कुटिया बना कर रहेगा, तो उसकी जनता महलों में आनन्द की नींद सोवेगी और जिस राज्य का मन्त्री महलों में ऐश करेगा, उसकी जनता झोंपड़ियों में रह कर दु:खी जीवन व्यतीत करेगी। इस बात को चाणक्य ने चरितार्थ करके दिखा दिया। आज के शासक व मन्त्री महलों में व फाईव स्टार होटलों में रहते हैं, तभी आज की जनता दुखी है। उन्हें आतंकवादियों का भय और महंगाई की मार सहनी पड़ रही है। उनको चाणक्य के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए।

3. शेर शिवा जी-भारत के इतिहास में राजनीति के क्षेत्र में शेर शिवा जी महाराज का भी एक विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे भी एक अद्वितीय साहसी और विलक्षण बुद्धि के राजनीतिज्ञ थे। इसीलिए वे एक साधारण छोटे से राज्य के राजा होकर, औरंगजेब जैसे अन्यायी, बड़े राज्य से टक्कर लेने में सफल हो सके। उसकी माता जीजा बाई एक धार्मिक व राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत भाव की विदुषी महिला थी जिसने अपने पुत्र शिवा को बचपन में ही अच्छी-अच्छी धार्मिक व वीरता की कहानियां सुना-सुनाकर उसे एक देश भक्त राजा बना दिया। शिवा जी ने अपनी गतिविधियों से औरंगजेब की नींद हराम कर रखी थी। औरंगजेब उसे पकड़ने की जितनी भी चालें चलता था, शिवा जी उन्हें निष्फल कर देता था और उसकी पकड़ में नहीं आता था। एक बार औरंगजेब ने अफजल खां को शिवा जी से सन्धि करने भेजा, यह भी उसकी चालाकी थी जिसे शिवा जी ने नाकाम कर दिया और अफजल खां के चंगुल से निकल गया। एक बार शिवा जी औरंगजेब की पकड़ में आ गया और उसे जेल में डाल दिया, पर शिवा जी जेल से ऐसी चतुरता से निकल गया कि औरंगजेब को पता भी नहीं लगा। शिवा जी, अपने छोटे से राज्य को हिन्दू राज्य घोषित करके इतना सुन्दर ढंग से राज्य चलाया जो भारत के इतिहास में एक उदाहरण बन गया।

4. लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल-सरदार पटेल आधुनिक समय के श्री कृष्ण कहलाते हैं। जिस प्रकार श्री कृष्ण ने खण्डित भारत को संगठित करके महाभारत बनाया, उसी प्रकार सरदार पटेल ने 562 रियासतों को मिलाकर एक विशाल भारत बनाया। सरदार पटेल की विलक्षण बुद्धि, दृढ़ निश्चय, अपरमित साहस, संगठन शक्ति को देखकर ही जनता में उन्हें लौह पुरुष की उपाधि से विभूषित किया। सरदार पटेल एक ऐसे दृढ़ विश्वासी व्यक्ति था जिसने जो काम करना ठान लिया उसे पूरा करके ही रहा।

अंग्रेजों ने हमें 15 अगस्त 1947 को आजादी तो जरूर दे दी परन्तु वह अधूरी आजादी थी। उस अधूरी आजादी को पूर्ण आजादी में परिवर्तित करने का श्रेय सरदार पटेल को ही जाता है। अंग्रेज जब भारत छोड़कर गए थे, तब भारत में 562 देशी रियासतें व रजवाड़े थे। वे सभी को स्वतन्त्र छोड़ गए थे। सभी रियासतें चाहे तो भारत में मिलें या चाहे पाकिस्तान में मिले या स्वतन्त्र रहें। सब छूट दे कर गए थे। वे तो यही उम्मीद रख कर गए थे कि 562 रियासतों व रजवाड़ों को भारत कभी भी नहीं मिला सकेगा और परस्पर लड़ाई-झगड़ा चलता रहेगा जिससे देश में अशान्ति बनी रहेगी। अन्त में हम ही आकर राज्य सम्भालेंगे, पर सरदार पटेल ने उनकी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। पटेल जी ने इतनी होशियारी व चातुर्य से सब राजाओं को समझाकर, डराकर या किसी से युद्ध करके सबको भारत में मिला लिया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

मुम्बई में आदर्श जीवन निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्वावधान में आर्य वीर दल मुम्बई द्वारा आयोजित आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण 02 से 10 मई 2015 तक आर्य समाज मुलुण्ड कालोनी मुलुण्ड (प.) के प्रांगण में आवासीय शिविर आयोजित किया गया। शिविराध्यक्ष श्री भूपेश गुप्ता महामन्त्री, आर्य समाज मुलुण्ड कालोनी के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण के साथ शिविर प्रारम्भ हुआ। शिविर में शारीरिक पाठ्यक्रम का संचालन श्री धर्मवीर आर्य के नेतृत्व एवं श्री कल्पेश आर्य व ज्ञानप्रकाश आर्य तथा नरेश शाक्षी के अथक पुरुषार्थ से सम्पन्न हुआ।

शिविर में लगभग 50 आर्य वीरों ने भाग लिया इनको कनिष्ठ एवं वरिष्ठ वर्गों में विभाजित किया गया जिसमें घाटकोपर, सायन, कुर्ला, बोरीवली, खार, मलाड, मुलुण्ड, डोम्बिवलि, ठाणे, भिवंडी, वसई, काकडवाड़ी, भाण्डुप आदि मुम्बई के विभिन्न स्थानों से शिविरार्थियों ने भाग लिया। प्रात: 5 बजे से रात्रि 10 बजे तक चलने वाली व्यस्त दिनचर्या में इन आर्यवीरों को आसन-प्राणायाम, कंग-फू कराटे, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार आदि के व्यायाम तथा विभिन्न खेल खिलाए गए। ईश्वर-जीव-प्रकृति, वेद सृष्टि रचना, पंचमहायज्ञ, 16 संस्कार वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था की जानकारी सरल ढंग से दी।

बौद्धिक कक्षाओं में स्थानीय विद्वानों श्री योगेश शास्त्री, श्री नागेश शास्त्री, श्री दिलीप वेलाणी, श्री विक्रम गुप्ता, श्री सन्दीप गुप्ता, श्री नरेन्द्र वेदालंकार, श्री प्रकाश वेदालंकार ने चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास, तनाव मुक्ति, योग व व्यवहारिक जीवन में सफलता स्वस्थता आदि विषयों पर प्रकाश डाला। इन सभी विषयों की बौद्धिक परीक्षा ली गई जिसमें वरिष्ठ वर्ग में प्रवीन आर्य ने प्रथम, हर्ष द्वितीय एवं आयुष्मान ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कनिष्ठ वर्ग में हर्षिल दमनिया प्रथम, अनुज द्वितीय तथा विवेक ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। अनुशासन में अमन, आसन में अभिराम, कराटे में रितेश, स्केटिंग में अंकुश, तीरअन्दाजी में यश, शूटिंग में अंकित, सर्वांगसुन्दर व्यायाम में शुभम एवं सेवा में विशाल सरोहा ने विशेष स्थान प्राप्त किया।

आर्य वीरांगना दल की संचालिका आदरणीय श्रीमती जयाबेन जी ने माता पिताओं की भावनाओं का सम्मान किया। शिविर में बच्चों को भेजकर सही निर्णय लिया। पंडित धर्मवीर आर्य सिद्धान्ताचार्य महामन्त्री -आर्य वीर दल मुम्बई ने सभी समाजों के अधिकारियों के विशेष सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापन किया। अन्त में ध्वजावतरण तथा शिक्षकों द्वारा शान्ति पाठ के साथ शिविराध्यक्ष ने शिविर समाप्ति की घोषणा की। तत्पश्चात् सभी ने ऋषि लंगर में भाग लिया।

68वां नि:शुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर

दिनांक 12 जुलाई 2015, रविवार को प्रात: 9.30 बजे से 12.00 बजे तक आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर के तत्वावधान में जनसहयोग से 68वां नि:शुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर स्वतन्त्रता सेनानी श्री छोटू सिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में लगाया गया। कार्यक्रम प्रात: 7.30 बजे यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। ऊ.मरमुनि जी ने यज्ञ के महत्त्व को बताते हुए उपस्थित आर्य जन को यज्ञ दैनिक जीवन में अपनाने एवं पर्यावरण शुद्धि हेतु निरन्तर प्रयत्न करने के लिए प्रेरित किया। श्री निरंजन लाल डाटा ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला तथा 'पंडित हेतराम आर्य' सभागार में बन रही आर्ट गैलरी हेतु 1 लाख रुपए दान दिए। श्रीमती सुरभी चन्द्रा पत्नी श्री सचिन चन्द्रा 'पंडित हेतराम आर्य' सभागार में बन रही आर्ट गैलरी हेतु 51,000/- रुपए दान दिए। शिविर के मुख्य अतिथि श्री निरंजन लाला डाटा, अलवर ने रिबिन काटकर शिविर का उद्घाटन किया। शिविर में लगभग 300 रोगियों को डॉ. देशबन्धु गुप्ता-मुख्य चिकित्सा एवं स्वा. अधि. (से.नि.), डॉ. डी.सी. शर्मा-जिला मातृ शिशु एवं स्वा.अधि. (से.नि.), डॉ. गोपाल गुप्ता-नेत्र रोग विशेषज्ञ, डॉ. इन्दु गुप्ता-वरिष्ठ महिला चिकित्सक, डॉ. ऋचा भार्गव-दंत चिकित्सक तथा डॉ. बी. एल. सैनी होम्योपेथी D.H.M.S., M.D. (Elec. Med.) ने अपनी नि:शुल्क सेवाएं प्रदान की। इस अवसर पर सर्वश्री हरदयाल शर्मा, अशोक आर्य, छबीलदास पाया, कमला शर्मा, संजय भाटिया, ज्ञान प्रकाश मित्तल, डॉ. राजेन्द्र कुमार आर्य, धर्मवीर आर्य, शिव कुमार कौशिक, एडवोकेट हेमराज कल्ला, एडवोकेट गिरिश भार्गव, एडवोकेट जगदीश प्रसाद धार, एडवोकेट प्रदीप विजय, सुमन आर्य, दिविशा आर्य, ईश्वर देवी तथा राजगढ़ से खेमसिंह आर्य, नेक सिंह आर्य, लोकेश सिंह आर्य, दुष्यंत आर्य, मयंक आर्य, रमा आर्य, माया आर्य, जमना देवी आर्य आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। -प्रदीप आर्य

योग सप्ताह समाप्त समारोह

योग भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है इसके महत्त्व को सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकार किया है। माननीय प्रधानमंत्री जी की पहल पर 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया गया है। योग सिर्फ बड़ों के लिए ही नहीं, बल्कि छोटे बच्चों के लिए भी एक तरह की कला है। साथ ही बच्चों को स्वस्थ रखता है। अत: अपनी भावी पीढ़ी के जीवन में इसके महत्त्व को देखते हुए आर्य कन्या विद्यालय समिति अलवर ने समिति द्वारा संचालित समस्त विद्यालयों में 3 जुलाई से 10 जुलाई 2015 को प्रात: 8.00 बजे वैदिक विद्या मन्दिर, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में योग सप्ताह का समापन श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता, प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति की अध्यक्षता में हुआ।

मंचासीन अतिथियों का विद्यालयी छात्राओं प्राची तथा प्रीति ने वैदिक परम्परानुसार तिलक लगाकर एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। कार्यक्रम गायत्री मंत्र के साथ प्रारम्भ हुआ। योग सप्ताह में मोराजी देसाई राष्ट्रीय इंस्टीच्यूट ऑफ योगा, नई दिल्ली से प्रशिक्षित सुश्री दीपाली रेसवाल द्वारा आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर द्वारा संचालित आर्य बा.उ.मा.वि. स्वामी दयानन्द मार्ग, आर्य बा.उ.मा.वि., लाजपत नगर, आर्य बा.उ.मा.वि., मालवीय नगर, आर्य बा.उ.मा.वि. हसन खां, आर्य पब्लिक स्कूल, स्वामी दयानन्द मार्ग, आर्य पब्लिक स्कूल, हसन खां तथा आर्य पब्लिक स्कूल, मालवीय नगर में अध्ययनरत लगभग 4000 छात्राओं एवं शिक्षकों को आठ दिनों तक ग्रीवाशक्ति विकासक क्रिया, कीटशक्ति विकासक क्रिया, घुटना संचालक क्रिया, ताड़ासन, वृक्षासन, पादहस्तासन, त्रिकोणासन, अर्द्धचक्रासन, दण्डासन, त्रजासन, अर्द्धउष्ट्रासन, शंशाकासन, कपालभाती, अनुलोम-विलोम/नाड़िशोधन प्राणायाम, भ्रामरि प्राणायाम, ओ३म् ध्वनि आदि का प्रशिक्षण दिया। जिससे स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मस्तिष्क का विकास हो सके।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए समिति प्रधान, जगदीश प्रसाद गुप्ता ने छात्राओं को संबोधित करते हुए योग के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए योग को जीने का तरीका बताया है, जिसे अपने दैनिक जीवन में अपनाने से शारीरिक एवं मानसिक विकास के साथ आत्मा का भी विकास होता है। समिति मंत्री, श्री प्रदीप आर्य ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए छात्राओं को योग को दैनिक जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया।

समिति निदेशक, श्रीमती कमला शर्मा ने मंच संचालित करते हुए छात्राओं के स्वस्थ जीवन के लिए योग का लगातार अभ्यास करने के लिए कहा। योग नकारात्मक प्रवृत्तियों को रोककर सकारात्मक लाने में सहायक होता है। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर सर्वश्री अशोक आर्य, सुरेश दरगन, शशिबाला भार्गव, धर्मवीर आर्य, शिक्षकगण आदि उपस्थित रहे। -कुमला शर्मा

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। हमारा हर सम्भव प्रयास होता है कि इस पत्रिका में उच्च कोटि के विद्वानों के सारगर्भित लेख प्रकाशित कर आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के अनुसार प्रचार करते हुए आम जनता तक इसका लाभ प्राप्त हो। लेकिन यह तभी संभव है जब आप सब का हमें पूरा सहयोग मिले। इसलिए आर्य मर्यादा के ग्राहकों से निवेदन है कि जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपए है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपए हैं। इसलिए मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

शोक संवेदना

फगवाड़ा आर्य समाज गौशाला रोड के साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् पंजाब केसरी जालन्धर डायरैक्टर श्रीमती स्वदेश चोपड़ा तथा नगर की अनेक शिक्षण संस्थाओं के संचालन में उल्लेखनीय भूमिका निभाने वाले सुखजीत स्टार्च मिल्ज़ के एकसीक्यूर डायरेक्टर श्री एस. एम. जिन्दल को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। इन पुण्य आत्माओं की स्मृति में हवन यज्ञ में महामृत्युंजय मंत्र एवं गायत्री मन्त्र का पाठ करते हुए आहुतियां भी दी गई।

श्रीमती स्वदेश चोपड़ा एवं श्री एस. एम. जिन्दल को स्मरण करते हुए आर्य समाज गौशाला रोड के प्रधान डा. कैलाश नाथ भारद्वाज तथा उप प्रधान श्री धर्मवीर नारंग ने समाज के प्रति उनकी सेवाओं की विस्तार से चर्चा की। महामंत्री डा. यश चोपड़ा ने कहा कि श्रीमती स्वदेश चोपड़ा के निधन से श्री विजय चोपड़ा एवं पंजाब केसरी परिवार के साथ-साथ पूरे समाज को क्षति पहुंची है। वक्ताओं ने कहा कि इसी प्रकार श्री एस. एम. जिन्दल की शिक्षण कार्यों के प्रति समर्पित सेवाओं के लिए उन्हें हमेशा याद किया जाता रहेगा। श्री जिन्दल के परिवार ने उनकी पुण्य स्मृति में एक ट्रस्ट बना कर मेधावी छात्रों को वार्षिक वज़ीफा देने का जो निर्णय लिया है, इस बात के लिए उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

इस मौके पर श्रीमती सरला चोपड़ा, नीलम चोपड़ा, बलराज खोसला, रमेश वर्मा, सुरिन्द्र चोपड़ा, बलीश गौतम, संजीव सभ्रवाल, सुशील कोहली, सुशील वर्मा, उर्मिला सूद, सावित्री सरदाना, सुभाष दुआ तथा आर्य माडल सी. सै. स्कूल के स्टाफ सदस्य भी मौजूद थे।

-डा. यश चोपड़ा, महासचिव

मानव बन

1. बोल सको तो मीठा बोलो, कटु बोलना मत सीखो।
   लगा सको तो बाग लगाओ, आग लगाना मत सीखो।।
   बोल...............

2. जला सको तो दीप जलाओ, दिल का जलाना मत सीखो।
   मिटा सको तो अहं मिटाओ, प्रेम मिटाना मत सीखो।।
   बोल...............

3. बिछा सको तो फूल बिछाओ, शूल बिछाना मत सीखो।
   बता सको तो सुपथ बताओ, पथ भटकाना मत सीखो।।
   बोल...............

4. भला किसी का कर न सको, तो बुरा किसी का मत करना।
   हो अमृत नहीं पिलाने का, तो जहर पिलाना मत सीखो।।
   बोल...............

5. कभी मधुर न बोल सको, तो कटु वचन भी मत कहना।
   मरहम पट्टी कर न सको, तो घाव लगाना मत सीखो।
   बोल...............

6. देव यदि तुम बन न सको, तो कम से कम इन्सान बनो।
   दीपक बन कर जल न सको, तो दीप बुझाना मत सीखो।
   बोल...............

7. फूल नहीं बन सकते हम तो कांटे बन कर मत चुभना।
   पुण्य नहीं कर सकते हो तो, पाप भी करना मत सीखो।।
   बोल...............

8. मनुर्भव उपदेश वेद का, पालन कर तुम आर्य बनो।
   पर सेवा व्रत ले न सको तो, बाधक बनना मत सीखो।।
   बोल...............

देश की शान बढ़ाओ

-ले० पंडित नन्द लाल निर्भय पत्रकार, वेद प्रचारक
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल हरियाणा

प्यारा आर्यवर्त्त था, दुनिया का सरताज।
आर्यों का था विश्व में, चक्रवर्ती राज।।
चक्रवर्तीराज, जगत करता था आदर।
चरित्रवान, गुणवान, यहां थे सब नारी-नर।।
गौ ब्राह्मण की आर्य, सभी करते थे सेवा।
करते थे सब प्राप्त सुयश की पावन सेवा।।

नरेन्द्र मोदी जी! सुनो नेता चतुर सुजान।
भारत के हो इस समय, तुम मन्त्री प्रधान।।
तुम मंत्री प्रधान, जगत के नामी नेता।
वैदिक पथ पर चलो, बनो तुम वीर विजेता।।
श्री राम से बनो, बहादुर वीर निराले।
श्री कृष्ण से बनो, राज नेता मलवाले।

वचन दिए थे आपने, याद करो श्रीमान।
गौ रक्षा का कीजिए, खुल कर ऐलान।।
खुल करके ऐलान, सख्त कानून बनाओ।
बनो शिवा, प्रताप, वीर बन्दा बन जाओ।।
संविधान से तीन सौ सत्तर दफा हटाओ।
सबके लिए समान, यहां कानून बनाओ।।

अयोध्या में श्री राम के, मन्दिर का निर्माण।
शुरू कराओ शीघ्र तुम, यदि चाहो कल्याण।।
यदि चाहो कल्याण, बनो नेता तपधारी।
मानवता लो धार, प्रभु के बनो पुजारी।।
जो करता शुभ कर्म, जगत में शुभ फल पाता।
धर्मी का यशगान, विश्व में गाया जाता।।

वचनों का पालन करो, करो धर्म के काम।
भला इसी में आपका, करो सार्थक नाम।।
करो सार्थक नाम, देश की शान बढ़ाओ।
बनकर वीर सुभाष, अमर जग में हो जाओ।।
जगत गुरु ऋषि दयानन्द की, शिक्षा मानो।
बन सरदार पटेल, राष्ट्र हित को पहचानो।।

पृष्ठ 5 का शेष- देश के चार.....

जूनागढ़ व ग्वालियर महाराजा ने कुछ आना-कानी की थी, परन्तु उनको भी समझा बुझा कर मना लिया। केवल हैदराबाद का बादशाह नहीं मिलना चाहता था। उसको भी सेना भेजकर चार घण्टों में ही भारत में मिला लिया। अब केवल कश्मीर की एक समस्या रह गई। जब पाकिस्तान ने कश्मीर पर चढ़ाई कर दी, तब वहां के राजा हरिसिंह दिल्ली आकर पटेल जी से सन्धि कर ली, तब पटेल जी ने काश्मीर पर चढ़ाई कर दी और दो तिहाई हिस्सा कश्मीर का जीत भी लिया, तभी नेहरू जी ने बीच में टांग लगाकर सेना को आगे बढ़ने से रोक दिया और कश्मीर की समस्या को जहां की तहां रखकर केस को राष्ट्र संघ में दे दिया, जिससे आप भी कश्मीर का एक तिहाई हिस्सा शिर दर्द बना हुआ है। यदि नेहरू जी टांग नहीं लगाते तो कश्मीर की समस्या भी हल हो गई होती और आज भारत विश्व के मजबूत और सुदृढ़ देशों में गिना जाता। आज हमें पाकिस्तान जैसा छोटा देश भी आंख दिखा रहा है। यदि कश्मीर समस्या हल हो जाती तो चीन और अमेरिका भी हमें आंख नहीं दिखा सकते थे और भारत एक सुदृढ़ राष्ट्र के रूप में खड़ा हुआ दिखता और हम सभी भारतवासी सुख और आनन्द की नींद सोते।

वेदवाणी

परमात्मा हमारा और हम परमात्मा के प्यारे हो जाएं

प्रियो नो अस्तु विश्वपतिर्होता मन्द्रो वरेण्यः।
प्रियाः स्वग्नयो वयम्॥

-ऋ० १/२६/७, सा. उ. ८/१/१

ऋषि-आजीगर्तिः शुनःशेपः॥ देवता-अग्निः॥ छन्दः-गायत्री।

विनय-हे मनुष्य भाइयो! हम अपने परम आत्मा को, परम अग्नि को भूल गए हैं। हम यह भी भूल गए हैं कि हम स्वयं भी वास्तव में आत्मा-रूप हैं, आत्माग्नि हैं। इसीलिए हम इस संसार की परम तुच्छ धन-सम्पत्ति, पुत्र, वधू, सुख-आराम, शरीर तथा सौन्दर्य आदि विनश्वर वस्तुओं से तो इतना प्रेम करने लग गए हैं, इनमें इतने आसक्त, लिप्त और अनुरक्त हो गए हैं कि हमें इस गन्दी दलदल में से ऊपर उठना असम्भव-सा हो गया है, परन्तु जो हमारा असली स्वामी, सखा और सब कुछ है, परम पवित्र प्रभू है, उसे हम दिन-रात के चौबीसों घण्टों में से कुछ क्षणों के लिए भी स्मरण नहीं करते। अब तो हम होश संभालें, जागें और अपने परम प्यारे अग्नि-प्रभु को अपना लें। वही हम सब प्रजाओं का एकमात्र पति है, स्वामी है, वही हमें सब सुखों को देने वाला 'मन्द्र' है, वही एकमात्र है जो हम सबका वरणीय है और वही है जो अपने परम यज्ञ द्वारा हम प्रजाओं को सब कुछ दे रहा है। अरे प्यारो! हम उसे छोड़कर कहां प्रेम करने लगे ? सचमुच हमने अपनी प्रेम शक्ति का अभी तक घोर दुरुपयोग किया है। क्या प्रेम जैसी वस्तु हमें इन अशुचित, तुच्छ, अनित्य वस्तुओं में रखने के लिए ही दी गई थी? आओ, अब तो हम अपने प्रेम के लक्ष्य को पा लें और उस मन्द्र 'विशपति' को, वरेण्य 'होता' को अपना प्यारा बना लें, अपना प्रेम उसे समर्पण कर दें। किन्तु इस प्रकार प्रेम पथ पर चल देने पर हे भाइयो! हमें भी उसे रिझाना होगा, उसे प्रसन्न करना होगा, उसके प्रेम को अपने प्रति आकर्षित करना होगा, अर्थात् हमें भी उसका प्यारा बनना होगा, और उसके प्यारे तो हम तभी बन सकते हैं जब हम "स्वग्नि" बन जाएं, उत्तम प्रकार की आत्माएं बन जाएं, अतः आओ, हम सब मनुष्य अपने उस परम प्यारे के लिए अपनी आत्माओं को शुद्ध करें। उस बृहद् अग्नि के लिए अपनी अग्नियों को उत्तम प्रकार की बना लेवें। अब हमारी आत्माग्नि से विश्वप्रेम की सुन्दर किरणें ही प्रसारित होवें, हमारी बुद्धि-अग्नि में से सत्य की ज्योति ही निकले, हमारी मानसिक अग्नि सर्वकल्याण के उत्तम विचारों में ही प्रकाशित हुआ करे और हमारी चित्ताग्नि से पवित्र इच्छाएं व भावनाएं ही उठें। इस प्रकार हम उत्तम अग्नि वाले हो जाएं, क्योंकि इसी प्रकार वह हमारा प्यारा हमसे प्रसन्न होगा। इसी प्रकार हमें अपने प्यारे को रिझाना है।

-वैदिक विनय से साभार

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।